आधुनिक संस्कृत साहित्य का सामान्य सर्वेक्षण

<u>मथुरा प्रसाद दिक्षित</u>

महामहोपाध्याय श्री मथुरा प्रसाद दीक्षित आधुनिक युग के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान् हैं। इनका जन्म सन 1878 ईस्वी में उत्तर प्रदेश के हरदोई जिले के अंतर्गत भगवंतनगर नामक ग्राम में हुआ था। एक संस्कृतज्ञ पंडित परिवार की संतान होने के कारण इनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुयी।

विद्यार्थी जीवन से ही अत्यधिक प्रखर बुद्धि के थे और शास्त्रार्थ में भी इनकी अभिरुचि थी। उच्च शिक्षा वाराणसी प्राप्त की। लाहौर में एचिसन कॉलेज में अध्यापन कार्य किया। 1921-1923 तक असहयोग आंदोलन में भाग लिया। श्री दीक्षित ने काव्य के अतिरिक्त साहित्य की अनेक विधाओं में लेखन किया।

इनकी प्रकाशित कृतियों में से कुछ के नाम हैं- निर्णयरत्नाकर, काशीशास्त्रार्थ, नारायणबलिनिर्णय, कुंडगोलनिर्णय, जैनरहस्य, मातृदर्शन, रोगिमृत्युविज्ञान। श्री दीक्षित ने ऐतिहासिक, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक विषयों पर कई संस्कृत रूपकों का प्रणयन कर संस्कृत नाट्यसाहित्य को समृद्ध किया है।

यहां राष्ट्रीय गौरव और देश भक्ति भावना को दर्शाने वाले इनके कई नाटक हैं- **वीरप्रतापनाटकम्**, **भारतविजयनाटकम्** और **गांधीविजयनाटकम्**। अपने नाटकों में भारत की स्वतन्त्रता के लिए अपने जीवन का उत्सर्ग करने वालों की चरित-गाथा है। सभी विशेषताओं से इनके काव्य समादरणीय हैं। इनकी अन्य प्रसिद्ध रचनायें भी हैं, यथा- **काव्यकलां**, **कविता रहस्य, प्राकृत-प्रकाश, केलिकौतुहलम्** और **मातृदर्शन** आदि।

श्री दीक्षित ने शिक्षित और समृद्ध परिवार का सुख 88 वर्ष की आयु तक प्राप्त किया और 1966ई. शरीर का त्याग किया।

पण्डित अम्बिकादत्त व्यास

श्री अम्बिकादत्त व्यास(सन् 1858-1900 ई.) का जन्म जयपुर में हुआ था। **'पंडित'** उपाधि से अलंकृत महाकवि व्यास ने 42 वर्ष की अल्पायु में जितनी अधिक और उत्कृष्ट साहित्य-रचना की, उतनी संपूर्ण पुरुषायुष पाने वाले विद्वानों के लिए भी दुष्कर है। 12 वर्ष की अवस्था में इनकी कविता से प्रसन्न होकर हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार **'भारतेंदु हरिश्चंद्र'** ने इन्हें **'सुकवि'** की उपाधि प्रदान की थी।

पंडित व्यास विलक्षण प्रतिभा के धनी साहित्यकार थे। इन्होंने संस्कृत में 27 ग्रंथ लिखे और हिंदी में 64 रचनाएँ की। सारी रचनाओं में से 52 रचनाएं ही उपलब्ध एवं प्रकाशित हो सकीं। इनका अतिप्रसिद्ध ग्रंथ **'शिवराजविजय'** है जिसकी रचना सन् 1898ई. में हुई। **'शिवराजविजय'** ऐतिहासिक उपन्यास की शैली में लिखा गया और 12 निश्वासों में निबद्ध वीररस प्रधान गद्य काव्य है।

बंगला साहित्य की उपन्यास विधा से प्रभावित होकर संस्कृत में उपन्यास की नई विधा का प्रयोग किया। **'शिवराजविजय'** नामक ऐतिहासिक उपन्यास में छत्रपति शिवाजी के राष्ट्र कल्याणपरक राजनीतिक कार्यों का वर्णन किया है। शिवाजी तथा सहायकगण देशप्रेमी, वीर, धर्मप्रेमी तथा सच्चरित्र व्यक्तियों के प्रतिनिधि हैं।

महाराष्ट्र के रत्न, वीर शिवाजी का चरित्र-चित्रण अत्यन्त उदात्त रूप में किया गया है। उन्हें दुर्दशा-ग्रस्त भारतवर्ष की आशाओं का एकमात्र आधार बताया गया है। शिवाजी ने देश के स्वाभिमान को वापस लाने की गम्भीर प्रतिज्ञा की हुई है- **'कार्यं वा साधयेयम्, देहं वा पातयेयम्।'**

काव्य की दृष्टि से विचार करने पर भाषा की उत्तमता और रसों का समुचित नियोजन इस उपन्यास में प्रशंसनीय है। राजनीति और रणकौशल का इसमें सुंदर निरूपण हुआ है।

इसमें संदेह नहीं की यह कृति अपने समय में ही राष्ट्रीय चेतना और आत्मसम्मान को उदीप्त करने और राष्ट्रीय गौरव की अभिवृद्धि करने में सहायक हुई और इसने भारतीय जन जागरण और स्वातन्त्रय-संग्राम में पर्याप्त प्रेरणा की।

अतएव **'शिवराजविजय'** संस्कृत साहित्य का प्रथम मौलिक उपन्यास ही नहीं, राष्ट्रीय गौरव का एक प्रमुख ग्रंथ भी है। इसी प्रकार पंडित अंबिका दत्त व्यास भी संस्कृत साहित्य में अपनी रचनाओं के आधार पर अपने काव्य कौशल के आधार पर आधुनिक संस्कृत साहित्य में आधुनिक विद्वान के रूप में प्रसिद्ध हैं।

भट्टमथुरानाथ शास्त्री

भट्टमथुरानाथ शास्त्री(1889-1964) युग प्रवर्तक साहित्यकार हैं। संस्कृत कविता को नया आयाम देने वाले कवि के रूप में, इतिहास और काव्यशास्त्र के ग्रंथों का आधुनिक शोध के मानकों के अनुरूप संपादन और प्रसार करने वाले विद्वान् के रूप में और संस्कृत भाषा को व्यावहारिक पद्धति से पढ़ाने वाले शिक्षक के रूप में इनका अविस्मरणीय योगदान रहा है।

संस्कृत वाङ्मय की विविध शाखाप्रशाखाओं में निष्णात कविशिरोमणि भट्ट जी राजस्थान की रतनगर्भा वसुंधरा के एक अनुपम रत्न हैं। इनके पिता का नाम द्वारकानाथ भट्ट था। इन्होंने अपने पितामाह पंडित लक्ष्मीनाथ भट्ट से संस्कृत की शिक्षा प्राप्त की थी। भट्टमथुरानाथ शास्त्री का जन्म राजस्थान के जयपुर में हुआ था। मूलतः इनके पूर्वज आंध्रप्रदेश से थे।

इनके बाल्यकाल में ही इनकी माता श्रीमती जानकी देवी का असामयिक निधन हो गया था। मातृस्नेह से वंचित भट्ट जी ने श्री काशीनाथ शास्त्री के कुशल प्रशिक्षण में अल्पायु में ही व्याकरणप्रवेशिका पूर्ण कर ली थी। पंजाब विश्वविद्यालय से इन्होंने अपनी शिक्षा पूर्ण की।

'मंजूनाथ' इनका साहित्यिक नाम है । इनकी अनेक रचनाएं हैं यथा- मनोलहरी, सुरभारती, जयपुरवैभवम्, महेन्द्रनीराजनम्, सतीसप्तदशी । ऐतिहासिक गद्य में भारतवैभवम् आदि हैं । इन्होंने ग़ज़ल, गीति इत्यादि भी लिखे हैं । इन्होंने अनेक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन भी किया है यथा- संस्कृतरत्नाकर, भारती, वेदांक, आयुर्वेदांक, शिक्षांक, दर्शनांक इत्यादि ।

इन्हें अनेक उपाधियाँ एवं सम्मान भी प्राप्त हुए हैं- 'कविशिरोमणि' उपाधि, 'कविसार्वभौम' इत्यादि । भट्टमथुरानाथ शास्त्री जी ने हिंदी, उर्दू, बांग्ला, गुर्जर आदि भाषाओं के साहित्य का अध्ययन कर उनकी विशेषताओं को संस्कृत में अवतरित करने का प्रयत्न किया ।

घनाक्षरी, सोरठा, दोहा, सवैया, कुंडलियां इत्यादि अपभ्रंश के छंदों को एवं उर्दू भाषा में प्रचलित सभी छन्दों को अपने सहज लालित्य के साथ सफलतापूर्वक संस्कृत में अवतरित किया । भट्टजी संस्कृत में ग़ज़ल के प्रथम प्रयोक्ता के रूप में जाने जाते हैं । शिल्प की दृष्टि से भट्टमथुरानाथ शास्त्री के काव्य की विशेषता अनुप्रास, तुकान्त आदि का कुशल संयोजन तथा प्रसाद गुण का निर्वाह है ।

सुबोधचन्द्र पन्त

संस्कृत भाषा के अद्यतनयुगीन प्रबंध काव्यों में विशेष रूप से उल्लेखनीय तथा प्रासंगिक काव्य **'झाँसीश्वरीचरितम्'** के प्रणेता सुबोधचंद्र पंत का जन्म 7 जुलाई 1934 में उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में प्रयाग में हुआ । इनके पितामाह यमुनादत्त प्रकाण्ड संस्कृतज्ञ विद्वान् तथा धर्मशास्त्र के सुविज्ञ आचार्य थे ।

इस वंश में प्रायः सभी आयुर्वेदज्ज रहे हैं । कई 100 वर्षों पहले इनके पूर्वज जयदेव पंत जो कि महाराष्ट्र के निवासी थे । बद्रीनाथ के दर्शन की अभिलाषा से देवभूमि उत्तराखंड

आए थे । उत्तरांचल की प्राकृतिक सुषमा ने इन्हें वही रोक लिया । **'झाँसीश्वरीचरितम्'** के रचनाकार से पंत एक सहज कवि हृदय हैं ।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम अमर है । कवि ने उन्हें देवी दुर्गा के अवतार के रूप में इस ग्रंथ में चित्रित किया है । इनकी प्रारंभिक शिक्षा तथा माध्यमिक स्तर की शिक्षा इलाहाबाद की विद्यालयों से हुई । उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए पंत जी इलाहाबाद विश्वविद्यालय गए ।

पंत जी का मौलिक महाकाव्य **'झाँसीश्वरीचरितम्'** है । इसके अतिरिक्त संस्कृत के नैषधीयचरितम्, कुमारसंभवम्, मेघदूतम्, गंगालहरी, भामिनीविलास आदि काव्य का हिंदी अनुवाद आदि कृत्य प्राप्त होते हैं ।

राजराज वर्मा

राजराज वर्मा का जन्म 1863 में त्रिवेंद्रम से 140 किलोमीटर उत्तर एक घनी आबादी वाले नगर चंगनाशशेरी के लक्ष्मीपुरम महल में हुआ था । राजराज वर्मा विशेष सुसंस्कृत माता-पिता की संतान थे । राजराज वर्मा की प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा पारंपरिक तरीके से सुविज्ञ शिक्षकों की देखरेख में हुई थी । कम उम्र में राजराज वर्मा में संस्कृत काव्य-रचनाधर्मिता की प्रतिभा फूट पड़ी ।

इन्होंने संस्कृत व्याकरण और अलंकारशास्त्र का भी अध्ययन किया और संस्कृत में ऐसी कविताएं करनी शुरू की । कतिपय कविताओं के शीर्ष हैं- **'देवीमंगलम्'**, **'सरस्वती स्तवम्'**, **'रागमुद्रासप्तकम्'** और **'देवीदंडकम्'** । अपनी मातृभाषा में रचना की ओर ध्यान देने में इन्हें अधिक समय लगा । राज राज वर्मा का शैक्षणिक जीवन 28 वर्षों तक चला राजराज वर्मा की सर्वाधिक रोचक संस्कृत कविताओं में से एक **'वीत विभावरी'** है राधा और माधव

का मिलन है तो 4 सर्गों में रात्रि के चार प्रहरों का वर्णन किया है । इनकी मलयालम कविताएं जैसे **'मलय विलासम्', 'प्रसादमाला'** आदि ।

केशवचन्द्र दास

केशवदास **संस्कृत काव्यशास्त्र** का सम्यक् परिचय कराने वाले **हिंदी** के प्राचीन आचार्य और **कवि** हैं । इनका जन्म सनाढ्य ब्राह्मण कुल में हुआ था । इनके पिता का नाम काशीराम था । जो **ओड़छानरेश मधुकरशाह** के विशेष स्नेहभाजन थे । मधुकरशाह के पुत्र महाराज इन्द्रजीत सिंह इनके मुख्य आश्रयदाता थे । वे केशव को अपना गुरु मानते थे ।

केशवदास **संस्कृत** के उद्भट विद्वान् थे । इनके कुल में भी संस्कृत का प्रचार था । नौकर-चाकर भी संस्कृत बोलते थे । इनके कुल में भी संस्कृत छोड़ हिंदी भाषा में कविता करना इन्हें कुछ अपमानजनक सा लगा । केशव बड़े भावुक और रसिक व्यक्ति थे ।

केशवदास रचित प्रामाणिक ग्रंथ नौ हैं : **रसिकप्रिया, कविप्रिया, नखशिख, छंदमाला, रामचंद्रिका, वीरसिंहदेव चरित, रतनबावनी, विज्ञानगीता और जहाँगीर जसचंद्रिका** । रसिकप्रिया केशव की प्रौढ़ रचना है जो काव्यशास्त्र संबंधी ग्रंथ हैं । इसमें रस, वृत्ति और काव्यदोषों के लक्षण उदाहरण दिए गए हैं ।

इसके मुख्य आधारग्रंथ हैं- **नाट्यशास्त्र, कामसूत्र** और रुद्रभट्ट का **शृंगारतिलक** । '**रामचंद्रिका**' उनका सर्वाधिक प्रसिद्ध **महाकाव्य** है जिसकी रचना में **प्रसन्नराघव**, **हनुमन्नाटक**, और **कादंबरी** आदि कई ग्रंथो से सामगी ग्रहण की गई हैं ।

केशवदास अलंकार सम्प्रदायवादी कवि थे । इसलिये स्वाभाविक था कि इन्होंने भामह, उद्भट और दंडी आदि अलंकार सम्प्रदाय के आचार्यों का अनुसरण किया।

केशवदास संस्कृत के प्रकांड़ पंडित थे, अतः इनकी भाषा संस्कृत से अत्यधिक प्रभावित है। इन्होंने संस्कृत के तत्सम शब्दों को ही नहीं, संस्कृत की विभक्तियों को भी अपनाया है । संस्कृत और बुंदेलखंडी के अत्यधिक प्रभाव, लंबी-लंबी शब्द-योजना, अप्रचलित शब्दों के प्रयोग आदि के कारण केशवदास की भाषा में कहीं-कहीं अत्यन्त क्लिष्टता आ गई है। संक्षेप में केशव की शैली प्रौढ़ और गंभीर है। पांडित्य-प्रदर्शन के कारण वह कुछ दुरूह हो गई है। केशव की छंद योजना संस्कृत साहित्य की छंद योजना है।

केशव दरबारी कवि थे । अन्य दरबारी कवियों की भांति उन्होंने भी अपने आश्रयदाता राजाओं का यशोगान किया है।

अप्पाशास्त्री राशिवरेडकर

अप्पाशास्त्री राशिवरेडकर ने संस्कृत में 141 पत्र लिखें, जो संस्कृतचन्द्रिका, सुनृतवादिनी, संस्कृतरात्नाकर, मंजूषा आदि में प्रकाशित हुयें । इनकी राष्ट्रीयचेतना परक काव्य रचना **'तिलकस्यकारागृहनिवासः'** है।

वी.राघवन

डॉ वी राघवन भारतीय साहित्य, संस्कृति और कला के विश्वविख्यात विद्वान थे। वे अनेक वर्षों तक मद्रास विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष रहे। उन्हें पद्म भूषण और

संस्कृत के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार सहित कई पुरस्कार प्राप्त हुए, और 120 से अधिक पुस्तकों और 1200 लेखों के लेखक थे। उन्होंने संगीत और सौंदर्यशास्त्र पर संस्कृत में कई किताबें लिखी।

1963 में, उन्होंने काव्य और नाट्य दोनों के साथ काम करने वाले 36 अध्यायों में संस्कृत काव्य के सबसे बड़े जाने-माने काम भोज के अंग-प्राका, का संपादन और अनुवाद किया। इस काम और उनकी टिप्पणी के लिए, उन्होंने 1966 में संस्कृत के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार जीता था। 1996 में उन्हें प्रतिष्ठित जवाहरलाल नेहरू फैलोशिप से सम्मानित किया गया।

उन्होंने संस्कृत रबींद्रनाथ टैगोर का पहला नाटक वाल्मीकि प्रतिभा में अनुवाद किया, जो वाल्मीकि के एक दस्यु से एक कवि में परिवर्तन के बारे में है। उन्होंने एक प्राचीन संस्कृत नाटक की खोज की और संपादित, उदयता राघवम मयूरराज द्वारा की गई थी।